वार्षिक समारोह / आमसभा

(इलेक्ट्रानिक सिस्टम द्वारा)

'अज्ञानाश्रय ट्रस्ट ' द्वारा आयोजित वार्षिक समारोह (इलेक्ट्रानिक सिस्टम द्वारा) में 'प्रबंधक न्यासी सदस्य' और 'आजीवन न्यासी सदस्य' ने बहुमत के क्रम में भाग लिया।

यह एक 'मेटाफिजिकल' एकेडेमिक ट्रस्ट है। इससे सम्बन्धित कतिपय प्रस्ताओं की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए ट्रस्ट के प्रत्येक सदस्य को सोच/समझकर अपना विचार देने के लिए पर्याप्त समय (05. 11.2021 से 20.11.2021 तक) दिया गया है। संयोजक का वक्तव्य, सचिव द्वारा वार्षिक विवरण और अध्यक्ष जी के वक्तव्य के साथ प्रस्ताओं के क्रम पर 'अज्ञानाश्रय ट्रस्ट' के सदस्यों द्वारा दिये गये विचारों का संक्षिप्त आवश्यक अंश निम्नक्रम में प्रस्तुत है –

आम सभा – प्रस्तावित कार्यक्रम –

1.संयोजक का संक्षिप्त वक्तव्य निम्नक्रम में प्रस्तुत है–

माननीय अध्यक्षजी और ट्रस्ट के सभी सदस्यगण,

सीमित संसाधनों के साथ यह 'अज्ञानाश्रय ट्रस्ट ' मानवीय मूल्यों के रक्षार्थ अपना प्रयास कर रहा है। उसका यह सार्थक प्रयास उल्टी हवा में चलने की तरह है। वर्तमान व्यवस्था में यह लगभग शत् प्रतिशत् सच है कि यदि आप व्यवस्था के विपरीत चलते हैं तो अपने को और साथ चलने वाले की आवश्यक सुरक्षा का भी ध्यान रखें। यद्यपि इस 'ट्रस्ट' ने विगत में कोई ऐसा कार्य नहीं किया है जो वर्तमान व्यवस्था को भौतिक क्रम में अप्रिय लगे।

इस ट्रस्ट का हमेशा से यह प्रयास रहा है कि – आध्यात्मिकता से जुड़ी भौतिकता के माध्यम से 'घर – समाज और राष्ट्र से जुड़े विविध अंगों और अंशों को इतनी गहराई तक उकेरा / कुरेदा जाये, जिससे उसमें लुकी – छिपी समस्याओं का समाधान व्यापक जनमानस पर आरोपित किया जा सके। हो सकता है कि – इस उकेरने की प्रक्रिया से समाज के निचले पायदान पर खड़ा व्यक्ति भी थोड़ा – बहुत लाभान्वित हो सके।

व्याधि, महाव्याधि या विविध प्राणघातक विषाणु संक्रमण को जनमानस में आने और उससे लोगों को प्रभावित होने से मात्र वर्तमान व्यवस्था नहीं रोक सकती है। इससे लड़ने और अपने को सुरक्षित रखने के लिए हर व्यक्ति को 'धार्मिक/आध्यात्मिक' दृष्टि से सशक्त बनना होगा। इस क्रम में उसे सबसे पहले 'सत्य, न्याय और स्वः अनुशासन आदि' के मार्ग पर चलने का अभ्यास करना होगा। यदि आप या जनमानस यह सोचे कि यह सब वर्तमान व्यवस्था करेगी तो यह सब आपकी भूल है। क्योंकि कोई भी व्यवस्था उपरोक्त मार्ग पर चलकर आगे नहीं बढ़ सकती है।

पूर्वकालिक व्यवस्थाएं 'राजधर्म' से संचालित होती थी। मानवीय मूल्य जगह – जगह किसी न किसी रूप में परिलक्षित होते थे। लेकिन वर्तमान व्यवस्था में 'राजधर्म' लगभग उसके आधीन हो चुका है। धर्म का चितकबरा कंबल ओढ़कर तथाकथित धार्मिक प्रतिभाएं वर्तमान व्यवस्था से जुड़ ही नहीं चुकी हैं बल्कि उससे जोंक की तरह चिपक गयी है। ऐसी विषम परिस्थिति में वह व्यापक जनमानस का कितना भला कर पायेंगे। – यह बिन्दु लगभग सभी प्रबुद्धजनों के लिए विचारणीय है।

वर्तमान की व्यापक व्यवस्था को देखते हुए व्यापक जनमानस से यही कहा जा सकता है कि – वे सबके सब उस दिशा की ओर चलने या बढ़ने का प्रयास करें जहां थोड़ी बहुत मानवता अवशेष के रूप में दिखती या परिलक्षित होती हो।

अन्त में, यह 'मेटाफिजिकल ट्रस्ट अपने सीमित संसाधनों के अन्तर्गत आगाह/सचेत कर सकती है कि – आप सब अहिंसात्मक प्रयास के अन्तर्गत आगे बढ़ने का प्रयास तो करें। क्योंकि अनावश्यक ठहराव से कोई भी रचनात्मक समाधान नहीं निकलेगा।

– संयोजक

उपरोक्त वक्तव्य को ट्रस्ट के सभी सदस्यों ने प्रेरणादायक बताया है। इससे समाज के सभी वर्गों को आत्मनिर्भरता के साथ प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

2. सचिव द्वारा वार्षिक प्रगति (अप्रैल 2020 – मार्च 2021) विवरण निम्नक्रम में प्रस्तुत है–

आदरणीय संयोजक जी, अध्यक्षजी और ट्रस्ट के सभी सदस्यगण,

'अज्ञानाश्रय ट्रस्ट' के इस पांचवें 'वार्षिक आमसभा /समारोह' का आयोजन 'इलेक्ट्रानिक सिस्टम' द्वारा किया गया है। विगत वर्ष (2020–2021) के एकेडेमिक (मेटाफिजिकल) कार्यों और आर्थिक उपलब्धि का विवरण निम्नक्रम में प्रस्तुत है–

1. कार्यकारिणी के बैठकों का विवरण – एक वर्ष (अप्रैल 2020 – मार्च 2021) में कार्यकारिणी की तीन बैठक (05.05.2020 – 11.05.20 = 12.05. 20.20 / 05.12.20 – 08.12.2020 =24.12.2020 / 11.03.2021 – 14.03. 2021 = 18.03.2021) सम्पन्न हुई। इन बैठकों में एकेडेमिक (मेटाफिजिकल) कार्यों के विस्तार और संवर्द्धन पर व्यापक चर्चा हुई।

2. प्रबंधक न्यासी सदस्यों की बैठकों का विवरण – एक वर्ष (अप्रैल 2020 – मार्च 2021) में प्रबंधक न्यासी सदस्यों की चार बैठक (05.05.2020 – 11.05.20 = 12.05.20 / 18.112020 – 20.11.2020 = 21.11.2020 / 25. 01.2021– 27.01.2021 = 0.02.2021 / 25.01.2021–31.01.21 = 05.02. 2021) सम्पन्न हुई। इन बैठकों मे एकेडेमिक (मेटाफिजिकल) कार्यों से सम्बन्धित कार्यकारिणी द्वारा प्रस्तुत तर्कसंगत विचारों का चर्चा के साथ अनुमोदन किया गया और कार्यकारिणी को उसे कार्यान्वित करने के लिए लिपिबद्ध क्रम में कहा गया।

3. आमसभा / वार्षिक समारोह का विवरण – चतुर्थ (4) वार्षिक समारोह / आमसभा का आयोजन इलेक्ट्रानिक सिस्टम द्वारा दिनांक : (25.08.2020 – 10.10.2020) को संयोजक द्वारा किया गया। इस आयोजन में ट्रस्ट के लगभग सभी सदस्यों ने भाग लिया। इस सभा की पूरी गतिविधि का विवरण ट्रस्ट की बेवसाईट पर उपलब्ध है।

3. बेवसाईट सम्बन्धी कार्य – बेवसाईट – **'agyanashraytrust.com'** के आवश्यक अंशों पर पुनः विचार करके उसके संशोधित / परिवर्तित अंश को पुनः 'बेवसाईट' पर आवश्यक विस्तार के साथ प्रबुद्ध पाठकों / आलोचको

के लिए प्रस्तुत किया गया। इसके साथ –साथ बेवसाईट पर शोधपरक लेखों और समाज की विविध समस्याओं से जुंड़े शोधपत्र प्रस्तुत किए गये।

4. आर्थिक उपलब्धि – विगत वर्ष की आर्थिक उपलब्धि का विवरण निम्न है –

4.1. 31 मार्च 2020 को ट्रस्ट के कोष में जमा धनराशि –6,32,054.00

4.2. 31 मार्च 2021 को ट्रस्ट के कोष में जमा धनराशि – 7,61,584.00

वार्षिक आय – 1,29,530.00

उपरोक्त धनराशि से एक एकेडेमिक ट्रस्ट का सुचार रूप से कार्य करना अत्यन्त कठिन है। हमें ट्रस्ट की वार्षिक आय को कम से कम 2,50,000.00 (वार्षिक) से ऊपर ले जाने पर विचार और प्रयास करना चाहिए जिससे ट्रस्ट की न्यूनतम् आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। 'ट्रस्ट' के सभी सदस्यों को चाहिए कि वे स्वेच्छा से आर्थिक सयोग समय – समय पर देतें रहें। इस संक्षिप्त विवरण को प्रस्तुत करने के साथ – साथ आगामिक कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए आप सबका सहयोग आपेक्षित हैं।

आशा है, आम सभा से जुड़े आप सब प्रबुद्धजन मानवीय मूल्यों के संवर्द्धन और संरक्षण हेतु इस प्रयत्नशील ट्रस्ट को समुचित विविध योगदान निरंतर देते रहेंगे

–सचिव

ट्रस्ट के सभी सदस्यों ने उपरोक्त विवरण को ठीक और सही माना है।

3. ट्रस्ट की 'मेटाफिजिकल' एकेडेमिक गतिविधियों को और सक्रीय बनाने के लिए निम्न बिन्दुओं पर विचार किया जा सकता है –

3.1. सामान्य डोनेशनदाताओं में जिनका आर्थिक सहयोग (31 मार्च 2021 तक) 11 हजार या उसके ऊपर है, उसे 'अज्ञानाश्रय ट्रस्ट ' की

'कार्यकारिणी' और 'प्रबंधक न्यासी मण्डल' के आपसी सहयोग से 'आजीवन न्यासी सदस्य' बनाया जा सकता है।

3.2. आजीवन सदस्य, जिनका आर्थिक सहयोग (31 मार्च 2021 तक) 21 हजार रूपये या उसके ऊपर पहुंच चुका है या उन्होंने ट्रस्ट के सक्रियता सम्बन्धी सभी बिन्दुओं पर पूर्ण सहयोग दिया है उन्हें 'कार्यकारिणी' और 'प्रबंधक न्यासी मण्डल' के आपसी सहयोग से 'प्रबंधक न्यासी मण्डल' से जोड़ा जा सकता है या उसके समकक्ष कार्य आबंटित किया जा सकता है।

इन क्रम संख्याओं से सम्बन्धित प्रस्ताओं पर सदस्यों का विचार निम्नक्रम में प्रस्तुत है–

उपरोक्त बिन्दुओं से ट्रस्ट के लगभग सभी सदस्य सहमत हैं।

4. ट्रस्ट की बेवसाईट – **(agyanashraytrust.com)** विगत वर्ष (01.04.2020 – 31.03.21) में ट्रस्ट की बेवसाईट के रख–रखाव, पुनःनवीनीकरण और यथासम्भव विकसित करने में निम्न व्यक्तियों का विशेष सहयोग रहा है –

1. श्री दिनेश मिश्रा (प्रबंधक न्यासी सदस्य)

2. श्री राजेश मिश्रा (आजीवन न्यासी सदस्य)

3. श्री आदित्य मिश्रा (विशेष सहयोगी)

उपरोक्त तीनों व्यक्तियों में श्री आदित्य मिश्रा 'अज्ञानाश्रय ट्रस्ट' के सदस्य नहीं हैं। यदि श्री आदित्य मिश्रा को 'ट्रस्ट' का 'आजीवन न्यासी सदस्य' बना दिया जाय तो 'ट्रस्ट की बेवसाईट '– सम्बन्धी कार्यों में एक स्थायित्व आ सकता है।

इन क्रम संख्याओं से सम्बन्धित प्रस्ताओं पर सदस्यों का विचार निम्नक्रम में प्रस्तुत है–

उपरोक्त बिन्दुओं से ट्रस्ट के लगभग सभी सदस्य सहमत हैं।

5.. ट्रस्ट से सम्बन्धित आवश्यक शोधपरक् सामग्री का वार्षिक प्रकाशन कराना।

इस क्रम संख्या से सम्बन्धित प्रस्ताओं पर सदस्यों का विचार निम्नक्रम में प्रस्तुत है–

उपरोक्त बिन्दुओं से ट्रस्ट के लगभग सभी सदस्य सहमत हैं।

6. श्री हरिशंकर द्विवेदी (संयोजक) की शोधपरक् पुस्तक 'मृतात्माओं की खोज' और श्री तरुण कुमार सिंह (प्रबंधक न्यासी सदस्य) द्वारा संयोजक जी से लिया गया लम्बा साक्षात्कार 'विपन्नता, सम्पन्नता और अध्यात्म' पूर्ण हो चुका है।

इन दोनों पुस्तकों के प्रकाशन और वितरण सम्बन्धी समस्या पर सभी सदस्यों द्वारा गम्भीरता से विचार करना और उससे सम्बन्धित सलाह।

इस क्रम संख्या से सम्बन्धित प्रस्ताओं पर सदस्यों का विचार निम्नक्रम में प्रस्तुत है–

6.1–3. विश्वस्तरीय दोनों ही पुस्तकें न्यास के लिए एक अमूल्य निधि सिद्ध होगी। अतः उनका प्रकाशन एवं वितरण पूर्व व्यवस्था की भांति किया जा सकता है। ट्रस्ट की बेवसाईट पर आवश्यक सुरक्षा एवं भुगतान की व्यवस्था के उपरान्त उनका प्रकाशन कदाचित जन मानस के लिए उपयोगी होगा।

–श्री मुरलीधर दुबे (प्र0 न्या0 स0/अध्यक्ष)/ श्रीमती मृदुला दुबे (प्र0 न्या0 स0) एवं श्री एस0 एन0 दुबे (प्र0 न्या0 स0)

6.4–5 उपरोक्त दोनों पुस्तक (मृतात्माओं की खोज व विपन्नता,सम्पन्नता और अध्यात्म) का प्रकाशन किसी स्तरीय प्रेस द्वारा कराया जा सकता है तथा वितरण कार्य ट्रस्ट के सदस्यों के सहयोग व व्यावसायिक माध्यम द्वारा किया जा सकता है।

उपरोक्त पुस्तकें ट्रस्ट की बेवसाईट पर भी अपलोड की जा सकती हैं।

– श्री तरुण कुमार सिंह / श्रीमती प्रीति राजपूत (प्र0 न्या0 स0)

6.6. दोनो पुस्तकों (मृतात्माओं की खोज और विपन्नता, सम्पन्नता और अध्यात्म) को उतनी ही संख्या में प्रकाशित किया जाय, जो न्यास के सदस्यों द्वारा वितरित किया जा सके। कार्यकारिणी द्वारा यह सुनिश्चित करना होगा कि उपरोक्त पुस्तकों की कितनी संख्या प्रकाशित की जाये जो न्यास के सदस्यों द्वारा सरलता से वितरित हो सके।

– श्रीमती सरला द्विवेदी (प्र0 न्या0 स0)

6.7. शोधपरक पुस्तकों (मृतात्माओं की खोज और विपन्नता, सम्पन्नता और अध्यात्म) के प्रकाशन और वितरण के सम्बन्ध में निम्न विचार प्रस्तुत है–

मेरे विचार से आज के आनलाइन प्रभावी युग में पुस्तकों का प्रकाशन और वितरण पहले की तुलना में उतना आसान नहीं रह गया है जितना पहले रहा है। ट्रस्ट की शोधपरक पुस्तकों में अमूल्य ज्ञान और मानवहित उद्वेशित मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जा रहा है। ऐसे में मेरे विचार से पुस्तकों का सीमित मात्रा में प्रकाशन करके , न्यासी सदस्यों के माध्यम से पुस्तकों का क्रय और वितरण एक अच्छा समाधान हो सकता है। इसके साथ – साथ ट्रस्ट की बेवसाईट पर इन पुस्तकों को अपलोड किया जा सकता है।

– श्री दिनेश मिश्रा (प्र0 न्या0 स0)

6.8–11. संयोजक महोदय के शोधपरक् पुस्तक (मृतात्माओं की खोज) और पुस्तकाकार साक्षात्कार (विपन्नता, सम्पन्नता और अध्यात्म) को लगभग : 200–300 प्रतियां ही प्रकाशित कराया जाय और साथ ही ट्रस्ट की बेवसाईट पर भी पस्तुत करना उचित प्रतीत होगा।

– श्री विजय प्रकाश पाण्डेय (प्र0 न्या0 स0/सचिव)/ सुषमा पाण्डेय/ सौरभ पाण्डेय / श्री अमितेश पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

6.12. **I concur for publication and distribution of both the books.**

-Anoop Kumar (Life Trustee)

6.13. **The research books of convener should be uploaded on the trust's website.**

Dr. Deepa Srivasava (Life Trustee)

6.14–16 शोधपरक पुस्तक (मृतात्माओं की खोज) और पुस्तकाकार साक्षात्कार (विपन्नता, सम्पन्नता और अध्यात्म) को लगभग : 200–300 प्रतियां ही प्रकाशित कराया जाय और साथ में ट्रस्ट की बेवसाईट पर भी अपलोड करा दिया जाये।

– श्री गिरजेश प्रसाद द्विवेदी /श्रीमती शान्ति द्विवेदी /डा0 अविनाश द्विवेदी (आ0 न्या0 स0)

6.17–18. शोधपरक दोनों पुस्तकों (मृतात्माओं की खोज और विपन्नता, सम्पन्नता और अध्यात्म) का प्रकाशन शीघ्र कराए जाने से सहमत हैं।

–प्रमोद कुमार श्रीवास्तव / श्रीमती कुसुम श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

6.19. ट्रस्ट के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए शोध सामग्री एवं पुस्तकों का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कार्य है और इसी से हम इसे व्यापक जनमानस तक पहुंचा सकते हैं। कोविड –19 के संक्रमण के प्रभाव को देखते हुए उपरोक्त साहित्य का प्रकाशन सीमित मात्रा में करना चाहिए और उसे ट्रस्ट की बेवसाईट पर भी अपलोड कर देना चाहिए।

– राजेश मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

6.20. यदि दोनों पुस्तकों 'मृतात्माओं की खोज' और 'विपन्नता, सम्पन्नता और अध्यात्म' को ट्रस्ट की बेवसाईट पर अपलोड कर दिया जाए तो अधिक से अधिक लोग पुस्तक पढ़ कर लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

– श्री श्रद्धानन्द श्रीवास्तव (आ0न्या0 स0)

6.21. यदि दोनों पुस्तकें ट्रस्ट की बेवसाईट पर उपलब्ध हों तो सामान्यजन इसका लाभ उठा सकेगे।

– डा0 दयानन्द श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

6.22. संयोजक महोदय की शोधपरक पुस्तक व साक्षात्कार का प्रकाशन कराया जाए और उसे ट्रस्ट की बेवसाईट पर अपलोड भी कराया जाए।

– श्री दिनेश कुमार मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

6.23. दोनों पुस्तकों को ट्रस्ट की बेवसाईट पर अपलोड करा दिया जाए।

– श्री मुकेश झा (आ0 न्या0 स0)

6.24. दोनों शोधपरक पुस्तकों 'मृतात्माओं की खोज' और 'विपन्नता, सम्पन्नता और अध्यात्म' को प्रकाशन के उपरान्त ट्रस्ट की बेवसाईट पर अपलोड करा दिया जाए।

– डा0 दीप्ति पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

6.25. शोधपरक पुस्तकों का प्रकाशन और वितरण सभी सदस्यों के सहयोग से करना चाहिए।

– श्रीमती संध्या मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

(विशेष – ट्रस्ट में उपलब्ध दोनों पुस्तकों ('मृतात्माओं की खोज' और 'विपन्नता, सम्पन्नता और अध्यात्म') की पाण्डुलिपियों को प्रकाशित कराने और उसे बेवसाईट पर अपलोड कराने के लिए लगभग सभी सदस्य सहमत है। पुस्तकों की प्रकाशित संख्या और वितरण व्यवस्था पर 'प्रबंधक न्यासी मण्डल' का सामूहिक निर्णय ही ट्रस्ट के लिए हर तरह से उपयोगी होगा। – संयोजक)

7. 'अज्ञानाश्रय ट्रस्ट' के वैचारिक मंच को बहुमुखी सामाजिक मुख्य धारा से जोड़ने के लिए अपना – अपना विचार प्रस्तुत करना।

इस क्रम संख्या से सम्बन्धित प्रस्ताओं पर सदस्यों का विचार निम्नक्रम में प्रस्तुत है–

7.1–3. सुक्षाव उचित है, सभी माननीय सदस्यों को समय – समय पर अपना विचार न्यास के उपयोगार्थ प्रस्तुत करना चाहिए।

–श्री मुरलीधर दुबे (प्र0 न्या0 स0/अध्यक्ष)/ श्रीमती मृदुला दुबे (प्र0 न्या0 स0) एवं श्री एस0 एन0 दुबे (प्र0 न्या0 स0)

7.4–5. 'अज्ञानाश्रय ट्रस्ट ' के विचारों , शोधपरक कार्य व लेखों को प्रकाशन व इन्टरनेट के माध्यम से जनमानस के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ट्रस्ट का कोई सदस्य अपने भाषणों के द्वारा भी ट्रस्ट के विचारों को प्रस्तुत कर सकता है।

– श्री तरुण कुमार सिंह / श्रीमती प्रीति राजपूत (प्र0 न्या0 स0)

7.6. न्यास के सदस्यों को चाहिए कि वे समय – समय पर अपना अमूल्य विचार विविध लेखों के माध्यम से ट्रस्ट में प्रस्तुत करें। इसे समय – समय पर बेवसाईट पर अपलोड करना चाहिए। जिससे विज्ञजन उसका वैचारिक लाभ उठा सकें।

– श्रीमती सरला द्विवेदी (प्र0 न्या0 स0)

7.7–8. 'अज्ञानाश्रय ट्रस्ट ' के वैचारिक मंच को बहुमुखी सामाजिक मुख्यधारा को जोड़ने के लिए निम्न विचार प्रस्तुत है–

सभी न्यासीगण ट्रस्ट के विचारों का प्रचार प्रसार अपने अपने कार्य और सामाजिक लेखों मे कर सकते हैं। इससे धीरे धीरे वैचारिक जागरूकता हो सकेगी और इस सोच में विश्वास रखने वाले ट्रस्ट से जुड़गें।

– श्री दिनेश कुमार मिश्रा (प्र0 न्या0 स0) व श्रीमती संध्या मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

7.9–10. देश में रहने वाले विभिन्न धर्मावलम्बियों और उनके अनुयायियों के मध्य, मजहबी शिक्षा से उत्पन्न वैचारिक संघर्ष एवं कट्टरता के समाधान हेतु ट्रस्ट के वैचारिक मंच को मुख्यधारा से जोड़ने हेतु कार्य करने के लिए विचार किया जाय।

– श्री विजय प्रकाश पाण्डेय (प्र0 न्या0 स0/सचिव) / सुषमा पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

7.11. **Trust under guidance of " convenor" has successfully completed lot if research work and same has been published also, But the challenge is to take it forward and integrate it with mainstream public.**

In last 10-15 years we have witnessed complete shift in mode communication and medium of education . We have moved from to online format, Instead of normal books or Newspaper everyone prefers e-book or e-newspaper, and

lately there are mobile applications where books are available in audible ormat. So, now we canplug-in to these reading application and listen to book while we are going out for walk or while travelling.

While developing website was first step towards spreading awarenss and integration with mainstream public , now we need to move to next step by developing mobile application version , so that it is easily available to new generation.

-Anoop Kumar (Life Trustee)

7.12. **Trust should take action against the religious and ideological conflicts.**

Dr. Deepa Srivasava (Life Trustee)

7.13–15. देश में रहने वाले विभिन्न धर्मावलम्बियों एवं उनके अनुयायियों के मध्य मजहबी शिक्षा से उत्पन्न वैचाारिक संघर्षों एवं कट्टरता के समाधान हेतु ट्रस्ट को विचार करना चाहिए।

– श्री गिरजेश प्रसाद द्विवेदी /श्रीमती शान्ति द्विवेदी / डा0 अविनाश द्विवेदी (आ0 न्या0 स0)

7.16–17. 'अज्ञानाश्रय ट्रस्ट' के विचारों को सामाजिक मुख्यधारा से जोड़ने के लिए सभी सदस्यों को लाभ और हांनि की चिंता न करते हुए इसका प्रचार – प्रसार करना होगा एवं आम जनमानस को जागृत करने के लिए प्रयास करना होगा। यदि सप्ताह में एक बार भी इस दिशा में प्रयास किया जाए तो धीरे धीरे इसका फैलाव होने लगेगा।

–प्रमोद कुमार श्रीवास्तव / श्रीमती कुसुम श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

7.18. **No comments.**

– राजेश मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

7.19. अज्ञानाश्रय ट्रस्ट के वैचारिक मंच को यदि बेवसाईट पर एक ब्लाग **(Blog)** के माध्यम से किया जाए तो यह अधिकाधिक लोगों का अपने साथ ला सकेगा।

– श्री श्रद्धानन्द श्रीवास्तव (आ0न्या0 स0)

7.20. मेरे विचार से शोसल मीडिया (फेसबुक और ट्टिर आदि) पर न्यास को अपनी उपस्थिति रखनी चाहिए।

– डा0 दयानन्द श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

7.21–22. विभिन्न देश में रहने वाले धर्मावलम्बियों एवं उसके अनुयायियों के आध्यात्मिक विकास एवं वैचारिक समरसता हेतु ट्रस्ट के मंच का उपयोग मानवहित में करने के लिए विचार करना चाहिए।

– सौरभ पाण्डेय / श्री अमितेश पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

7.23. धार्मिक उन्माद से उत्पन्न कट्टरता के समाधान हेतु ट्रस्ट के वैचारिक मंच को सामाजिक मुख्यधारा से जोड़ने के कार्य पर विचार हो।

– श्री दिनेश कुमार मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

7.24. ट्रस्ट के समस्त सदस्यों को सर्वधर्म के तहत मिली जुली गंगा यमुना की तहजीव पर समाज के मुख्य धारा में अपना विचार सर्वधर्म पर देना चाहिए।

– श्री मुकेश झा (आ0 न्या0 स0)

7.25. अज्ञानाश्रय ट्रस्ट के मंच को थोड़ा और विकसित करके बड़े पैमाने पर लाना चाहिए। साल में एक बार इसकी संगोष्ठी बड़े पैमाने पर करनी चाहिए।

ट्रस्ट के वैचारिक मंच को विविध मुख्यधारा से जोड़ने के लिए विविध इलेक्ट्रानिक सांधनों (बेवसाईट, फेसबुक, यू ट्यूब व मोबाइल आदि) का भरपूर उपयोग करना चाहिए। इसके साथ ट्रस्ट के सभी सदस्यों को चाहिए कि वह अपने अपने परिवेश में इसके साहित्य और दिशा निर्देश का प्रचार प्रसार करे।

– डा0 दीप्ति पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

7.26. बहुमुखी समाज की मुख्यधारा से जुड़ने के लिए हमें यह जानना होगा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह अपने आसपास घटित हो रही चीजों के लिए किन –किन चीजों का इस्तेमाल करता है, जिनके द्वारा वह जानकारियों को , खबरों को प्राप्त करता है। वह अपने अन्तर्मन की जिज्ञाशाओं को शान्त करने के लिए किन – किन साधनों का

इस्तेमाल करता है।

वैचारिक मंच को बहुमुखी सामाजिक मुख्यधारा से जोड़ने के लिए हमें सबसे पहले निम्नवत प्रयास करना चाहिए –

1.पत्रकारिता, मैगजीन, बेवसाईट,फेसबुक सोशल नेटवर्किंग, फेड सर्कल, एन0 जी0 ओ0 सोसायटी ट्रस्ट वर्किंग प्लेटफार्म और सोशल वर्क करने वाली संस्था होती है। उनके माध्यम से समाज में और पूरे संसार में जागरुकता फैलानी चाहिए।

2. हमें प्रयास करना चाहिए कि जिस सामाजिक परिवेश में , समाज मे हम जिन लोगों के साथ उठते बैठते हैं, हमारा जो सोशल नेटवर्किंग है, हमारे काम करने की जो जगह है। उनके साथ भी हम विचारों का आदान प्रदान कर सकते हैं।

3. हर आदमी अपनी जिज्ञाशाओं को शांत करने के लिए अलग – अलग प्रकार के माध्यमों का इस्तेमाल करता है।

4. हमें समय – समय पर प्रमोशन ऐक्टिविटीज का भी सहारा लेना चाहिए।

5. हमें स्टेज के माध्यम से, पत्रकारिता के माध्यम से अपने विचारों का आदान प्रदान करना चाहिए।

उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए अपनी एक ऐसी बेवसाईट का इस्तेमाल करना चाहिए, जहां आदमी इलेक्ट्रानिक मीडिया का इस्तेमाल करके करके पलभर में सारी विविध जानकारियों को किसी भी जगह प्राप्त कर सकता है।

– श्री पवनेश श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

. (विशेष – 'अज्ञानाश्रय ट्रस्ट ' के वैचारिक मंच को बहुमुखी सामाजिक मुख्य धारा से जोड़ने के लिए 'ट्रस्ट' के अधिकांश सदस्यों ने विषय से भरसक जुड़ने का प्रयास किया है। लेकिन जब तक उनका जुड़ाव 'भौतिकता और 'आध्यात्मिकता' (मेटाफिजिकल) के क्रम में नहीं होगा तब तक वे बहुमुखी सामाजिक मुख्य धारा से पूरी तरह कैसे जुड़ पायेंगे।

ट्रस्ट के वैचारिक मंच को बहुमुखी सामाजिक मुख्य धारा से जोड़ने के लिए सभी सदस्यों को वर्तमान परिस्थितियों के झंझावातों को गहराई से समझने और उसे समय – समय पर उकेरने का प्रयास करना होगा। दोनों के मध्य समन्वयात्मक सोच को विकसित करना होगा। –संयोजक)

8. राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर 'व्यापक जनमानस और राजनैतिक व्यवस्था के मध्य 'प्रशासनिक' और न्यायिक व्यवस्था' कैसी होनी चाहिए जिससे विविध अपराध न के बराबर हो। इस पूरी प्रक्रिया में विविध 'पत्रकारिता' का समावेश किस प्रकार का होना चाहिए।

इस क्रम संख्या से सम्बन्धित प्रस्ताओं पर सदस्यों का विचार निम्नक्रम में प्रस्तुत है–

8.1–3. 'व्यापक जनमानस' और 'राजनैतिक व्यवस्था' के मध्य 'प्रशासनिक' और 'न्यायिक व्यवस्था' कैसी होनी चाहिए जिसमें अपराध न के बराबर हो, एक अत्यंत ही व्यापक विषय है जिसमें पृथ्वी पर मानव का उद्भव, विभिन्न सभ्यताओं, संस्कृतियों का, उनके स्थान, काल एवं परिस्थितियों के अनुरूप विकास ; विभिन्न प्रशासनिक एवं न्यायिक व्यवस्थाओं का विकास, उन पर आधुनिक काल का प्रभाव, उनकी गतिशीलता/कठोरता आदि विभिन्न पहलू सन्निहित हैं, जिनको कदाचित एक सूत्र में पिरोकर समस्त मानवता हेतु एक सर्वमान्य व्यवस्था बना पाना सम्भव नहीं है। अपराधों की विविधता भी अनेक है, मानव जीवन से सम्बन्धित अपराध, सामाजिक वयवस्थाओं सम्बन्धी अपराध, आर्थिक अपराध, राज्य के विरुद्ध अपराध आदि। जहां किसी समाज में दूसरे धर्म , मत, संप्रदाय आदि के सम्बन्ध में हत्या जैसे कृत्य को भी धार्मिक कार्य से जोड़ा जाय, वहां एक जैसी व्यवस्था समस्त मानव समाज के लिए बना पाना एक दूर का सपना जैसा ही है। हर देश की न्यायिक व प्रशासनिक व्यवस्था वहां के लोगों के रूप से लम्बे संघर्षों के बाद विकसित किया है, उसमें बदलाव जनता ही कर सकती है। जनता में वहां के व्यवस्था के प्रति यदि कोई आक्रोश है तो इसकी आवाज वहीं से उठनी चाहिए।

निश्चय ही अपराधों में कमी मात्र प्रशासनिक व न्यायिक व्यवस्था द्वारा ही नहीं किया जा सकता। इस हेतु मानवीय मूल्यों का विकास, एक समुचित 'सिविल सेंस' (**civil sence**) का विकास, ईश्वर के प्रति भय आदि प्रमुख कारक सहायक हो सकते हैं।

– श्री मुरलीधर दुबे (प्र0 न्या0 स0/अध्यक्ष)/ श्रीमती मृदुला दुबे (प्र0 न्या0 स0) एवं श्री एस0 एन0 दुबे (प्र0 न्या0 स0)

8.4–5. राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर लोकतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था होनी चाहिए, जो जनकल्याण हेतु कार्य करेगी। यदि सरकारें ऐसा करने में विफल होंगी, तो जनता के पास सरकार को बदलने का अधिकार रहता है। अन्य शासन प्रणाली , जैसे – राजशाही, तानाशाही आदि व्यक्ति स्वार्थ को महत्व देती हैं, जिस कारण शीघ्र ही निरंकुश हो जाती हैं और जनता के हितों पर कुठाराघात करती हैं।

राष्ट्रीय और वैश्विक न्यायप्रणाली भी इस प्रकार की होनी चाहिए जिसमें जनता को शीघ्र न्याय प्राप्त हो तथा अपराधी को सुधार का अवसर प्राप्त हो। न्यायधीश पर व्यवस्था को विश्वास बनाकर रखना चाहिए ताकि जनता को शीघ्र व निष्पक्ष न्याय प्राप्त हो सके।

पत्रकारिता के माध्यम से जनता की समस्याओं को व्यवस्था के समक्ष उठाया जा सकता है तथा जनता से ही समस्याओं का निदान/उपचार/ सुझाव मांगे जा सकते हैं, जिन पर शासन व्यवस्था व न्याय प्रणाली द्वारा कार्य किया जायेगा जिससे जनकल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा।

– श्री तरुण कुमार सिंह / श्रीमती प्रीति राजपूत (प्र0 न्या0 स0)

8.6. राष्ट्रीय व विश्वस्तरीय व्यापक जनमानस और राजनैतिक व्यवस्था के मध्य 'प्रशासनिक व्यवस्था और न्यायिक व्यवस्था ' को एक ऐसे सेतुबन्ध की तरह होना चाहिए जो विविध अपराधों को समाप्त करने में सक्षम हो सके। इस जटिल कार्य में दोनों व्यवस्थाओं के मध्य 'प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्था' को सरकारी एजेन्ट (दलाल) की तरह कार्य नहीं करना चाहिए। इस कार्य में 'सत्य, न्याय, अहिंसा और अनुशासन आदि' का व्यापक समावेश होना चाहिए।

इस कार्य में विविध पत्रकारिता को राजनीति और व्यवस्था से थोड़ी दूरी बनाकर आगे बढ़ना चाहिए, जिससे उसमें पीत पत्रकारिता का समावेश न हो पाये। इस उपरोक्त उपक्रम से विविध अपराधों में निश्चित रूप से कमी आयेगी।

– श्रीमती सरला द्विवेदी (प्र0 न्या0 स0)

8.7. राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर व्यापक जनमानस और राजनैतिक व्यवस्था के मध्य ' प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्था ' कैसी होनी चाहिए, जिससे विविध अपराध न के बराबर हो, इस पूरी प्रक्रिया में विविध पत्रकारिता का समावेश किस प्रकार का होना चाहिए। इस पर निम्न विचार प्रस्तुत है–

इन सभी क्षेत्रों (प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्था और विविध पत्रकारिता) में जो भी अधिकारी, प्रतिनिधि, जनप्रतिनिधि व्यवस्था के हिस्सा हैं और इन व्यवस्थाओं को नियंत्रित करते हैं या चलाते हैं उन सभी की प्राथमिकता मानवहितों की संवेदना के साथ सुरक्षा, संवर्द्धन और विकास होना चाहिए। इन सभी व्यवस्थाओं को एक दूसरे का पूरक ही नहीं बल्कि आडिटर भी होना चाहिए। इन सबमें ईमानदारी, संवेदना और पूर्ण निष्ठा के साथ एक अनुशासित क्रम में केवल मानवहितों की रक्षा और विकास के उद्देश्य के लिए यह व्यवस्थाएं जब कार्य करने लगेंगी तब सभी बुराईयां और अपराध पर नियंत्रण पाना सम्भव है।

विविध पत्रकारिता भी इस व्यवस्था का एक अहं स्तम्भ है। व्यवस्था की कमियों को उजागर करने में, विकास कराने में विविध पत्रकारिता की प्रमुख भागेदारी हो सकती है। आम जनमानस, समाज और विविध व्यवस्थाओं के बीच सामंजस्य हेतु बनाने में विविध पत्रकारिता की मुख्य भूमिका हो सकती है। वहीं व्यवस्था की सफलता पर उसका प्रोत्साहन भी करना विविध पत्रकारिता का कर्तव्य भी होना चाहिए।

– श्री दिनेश मिश्रा (प्र0 न्या0 स0)

8.8–11. कोई आख्या हीं दी जा रही है।

– श्री विजय प्रकाश पाण्डेय (प्र0 न्या0 स0/सचिव) / श्रीमती सुषमा पाण्डेय /श्री सौरभ पाण्डेय/ श्री अमितेश पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

8.12. **The Legislature, Executive, Judiciary and media are four pillars of democracy and correct balance of power of four pillars is most important for development of society. Everyone has dfined role in society and any over -activism or in – activism is detrimental to society. We have two contrasting example with us, on one side we have country like Afghanistan, whare punishment under legal systems are very harsh**

and n another side we have India where every offence if bailable . And in both the country crime rate is high . In my view we should focus on following -

a-Right/ Correct education of citizens , ratherit should be made compulsory.

b-Employment for everyone, as per capability of individual.

c-Executive should focus drafting correct ad dynamic policies for society.

d-Legislature including opposition parties should support implementation of correct polices.

e-Judiciary to ensure compliance and swift & correct action on non compliance.

f-Media houses to play constructive role in naion building.

-Anoop Kumar (Life Trustee)

8.13. No comments.

Dr. Deepa Srivasava (Life Trustee)

8.14–16. कोई आख्या हीं दी जा रही है।

– श्री गिरजेश प्रसाद द्विवेदी /श्रीमती शान्ति द्विवेदी /डा0 अविनाश द्विवेदी (आ0 न्या0 स0)

8.17 राष्ट्रीय स्तर और विश्वस्तर पर व्यापक जनमानस और राजनैतिक व्यवस्था के मध्य प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्था पारदर्शी एवं त्वरित होने से अपराधों में कमी आ सकती है।

पत्रकारिता का भी स्तर सार्थक एवं उपयोगी होना चाहिए, केवल घटनाओं का नमक मिर्च लगाकर विवरण प्रस्तुत करना नहीं होना चाहिए।

– श्री प्रमोद कुमार श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

8.18. राष्ट्रीय स्तर और विश्वस्तर पर व्यापक जनमानस और राजनैतिक व्यवस्था के मध्य प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्था पारदर्शी एवं त्वरित हो

एवं साथ ही अपराधी व्यक्ति के लिए प्रायश्चित की भी व्यवस्था न्यायालय के संरक्षण में होनी चाहिए जिससे अपराधों में निश्चित रूप से कमी आयेगी।

पत्रकारिता का भी स्तर जनमानस के लिए समाधानमूलक एवं ज्ञानवर्द्धक सार्थक होना चाहिए।

– श्रीमती कुसुम श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

8.19. विश्व स्तर पर व्यापक जनमानस सहयोग एवं राजनीतिक व्यवस्था के मध्य प्रशासनिक एवं न्याय व्यवस्था कैसी होनी चाहिए, इस पर मेरा मत यह है कि व्यापक जनमानस सहयोग और राजनीतिक व्यवस्था दोनो एक दोनों के पूरक हैं, क्योंकि जनमानस के सहयोग के बिना राजनीतिक व्यवस्था एवं उसके उद्देश्यों की पूर्ति करना बहुत कठिन कार्य है। सामाजिक व्यवस्था को उन्नत बनाने के लिए इन दोनों व्यवस्था को समानान्तर रूप से एक साथ चलना होगा, जिसमें पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण माध्यम का कार्य करती है और दोनों जनमानस सहयोग और राजनीतिक व्यवस्था के बीच एक परस्पर समन्वय स्थापित करती है। पत्रकारिता का किसी एक तरफ झुकाव या उसका एक तरफ समर्थन करना दोनों व्यवस्थाओं के बीच एक बहुत बड़ी खांईं एवं समस्याओं को जन्म दे सकता है और ऐसे कई सारे उदाहरण हैं जो इसको चरितार्थ करते हें। पत्रकारिता में देशभक्ति,, सम्वेदना, व्यवस्था और ईमानदारी का भाव बहुत ही आवश्यक हैं ।

– श्री राजेश मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

8.20. न्याय निष्पक्ष और त्वरित एवं प्रशासनिक व्यवस्था पक्षपात रहित होनी चाहिए।

– श्री श्रद्धानन्द श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

8.21. सम्भव प्रतीत नहीं होता परन्तु एक समान व्यवहार करके सभी प्रकार की व्यवस्थाओं में अपराध के प्रतिशत को कम किया जा सकता है।

– श्री दयानन्द श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

8.22. कोई आख्या नहीं दी जा रही है।

– श्री दिनेश कुमार मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

8.23. कोई आख्या नहीं दी जा रही है।

– श्री मुकेश झा (आ0 न्या0 स0)

8.24. राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर 'व्यापक जनमानस और राजनैतिक व्यवस्था के मध्य 'प्रशासनिक' और न्यायिक व्यवस्था' को तभी एक दूसरे का समन्वयात्मक क्रम पूरक बनाया जा सकता है जब 'व्यापक जनमानस और राजनैतिक व्यवस्था के मध्य भी एक समन्वयात्मक सोच विकसित हो सके।

किसी भी राष्ट्र में जब तक विविध व्यवस्थाओं के मध्य ईमानदारी, परोपकार और विविध मानवीय संवेदनाएं विकसित होकर एक दूसरे का पूरक नहीं बनेगी और विविध पत्रकारिता उन सबका संवाहक/वाहन नहीं बनेगा तब अपराध की कमी को लेकर कुछ भी कहना एक अदद बेमानी होगी।

– डा0 दीप्ति पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

8.25. राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर 'व्यापक जनमानस और राजनैतिक व्यवस्था के मध्य 'प्रशासनिक' और न्यायिक व्यवस्था' निम्नवत् होनी चाहिए, जिससे विविध अपराध न के बराबर हों।

सबसे पहले हमें यह जानना होगा कि वास्तव में जो भी दंड प्रक्रिया, दंड प्रक्रिया विधि को अपना रहे हैं, क्या वह दंड प्रक्रिया विधि उस समाज में उपस्थित जनमानस के द्वारा सम्पूर्ण रूप से स्वीकार है कि नहीं और यह तभी सम्भव होगा, जब उन सम्पूर्ण जनमानस का विश्वास उस दंड प्रक्रिया विधि पर हो, और यह विश्वास लाने के लिए हमें गहराई से इस बात पर अध्ययन करना होगा कि कोई भी अपराध या जो भी अपराधी किसी अपराध में संलग्न होता है तो उसके पीछे मुख्य कारण क्या है, उसकी आवश्यकता क्या है। क्या वह पेशेवर अपराधी है या वह मजबूरी वश अपपराध करने के लिए विवश हुआ है।

हमें सम्पूर्ण रूप से इस बात पर गहन अध्ययन करना होगा कि जो अपराधी अपराध करने के कारण दंड प्राप्त करता है , वह भविष्य में उस दण्ड को प्राप्त करने के पश्चात् दुबारा अपराध करने की प्रवृत्ति को हमेशा के लिए त्याग दे। ऐसा तभी सम्भव है जब वह अन्तः मन से अपने अपराध का प्रायश्चित करे। क्योंकि जब तक कोई भी अपराधी अपने पापों का प्रायश्चित मन से स्वतः नहीं करेगा तब तक हम चाहे कितना भी दंड उसको प्रदान करें, उसकी अन्तरात्मा और उसका अन्तर्मन कभी भी उसके अपराध से उसको मुक्त नही ंकर पायेगा।

राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर 'व्यापक जनमानस और राजनैतिक व्यवस्था के मध्य 'प्रशासनिक' और न्यायिक व्यवस्था' कुछ इस प्रकार होनी चाहिए जहां पर हर स्तर के प्राणी को सही न्याय मिल सके।

प्रशासनिक व्यवस्था में , न्याय करने वाला न्यायाधिकारी, जब कोई भी न्याय करे तो उसे अपने अन्तर्मन से इस बात को पूर्ण रूप से स्वीकार करना होगा कि वह जो भी न्याय कर रहे हैं वह मात्र उपस्थित साक्ष्य और सबूतों के आधार पर न होकर, जो मुख्य कारण उस अपराध का होने का है उसकी जड़ में जाकर गहराई से विचार करे और उस पाप , अपराध के होने का जो मूल कारण है, उस मूल कारण को ढूढ़ते हुए, उसे समाप्त करें। क्योंकि जब तक वह मूल कारण को समाप्त नहीं करेगा, उस अपराधी के अन्दर उपस्थित उसके अन्तर्मन का अपराध कभी भी समाप्त नहीं हो पायेगा। इस क्रम में अपराधी को स्वयं अपराध बोध होगा और वह उससे दूर रहने का प्रयास करेगा।

जब वह पूर्ण रूप से व्यवस्था का अंग बनेगा, तभी हम समाज से और समाज में उपस्थित जनमानस को अपराधमुक्त कर सकते हैं।

इस पूरी प्रक्रिया में विविध पत्रकारिता को निरंतर रचनात्मक सहयोग बिना किसी भेद भाव के देना चाहिए। इसक्रम मे ंहम एक सीमा तक विविध अपराधों पर यथासम्भव नियंत्रण कर सकते हैं।

– श्री पवनेश कु0 श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

8.26. सभी व्यवस्थाओं को सच्चाई, ईमानदारी , संवेदना और पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करना चाहिए, तभी बुराईयों और अपराध पर नियंत्रण पाना सम्भव हो सके और जनमानस का उत्थान हो सकेगा।

– श्रीमती संध्या मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

(विशेष – राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर 'व्यापक जनमानस और राजनैतिक व्यवस्था के मध्य 'प्रशासनिक' और न्यायिक व्यवस्था' का वर्तमान प्रयास और विविध 'पत्रकारिता' का सहयोग 'विविध अपराधों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण नही कर पा रहा है। विश्व के तमाम सारे देशों में जनसंख्या की बृद्धि के अनुपात में विविध अपराधों की संख्या का प्रतिशत तीव्रगति से बढ़ रहा है। इन विविध अपराधों के बृद्धि का संकेत विविध कारागारों का तीव्र गति से विकास और उससे सम्बन्धित मन्त्रालय निरंतर देते रहते हैं।

उपरोक्त क्रम में यह लगता है कि हमें विविध अपराधों पर नियंत्रण हेतु विविध व्यवस्थाओं पर पुनः विचार करना चाहिए, क्योंकि अपराधों की निरंतर बृद्धि व्यापक जनमानस के लिए कभी हितकर नहीं होगा।

इस जटिल समस्यायुक्त विषय पर ' श्री मुरलीधर दुबे, श्रीमती मृदुला दुबे, श्री एस0 एन0 दुबे , श्री तरुण कुमार सिंह, श्रीमती प्रीति राजपूत, श्रीमती सरला द्विवेदी, श्री दिनेश मिश्रा, श्री अनूप कुमार, प्रमोद कुमार श्रीवास्तव, श्रीमती कुसुम श्रीवास्तव, श्री राजेश मिश्रा, श्री श्रद्धानन्द श्रीवास्तव, डा0 दयानन्द श्रीवास्तव, डा0 दीप्ति पाण्डेय , पवनेश कु0 श्रीवास्तव व श्रीमती संध्या मिश्रा' आदि न्यासियों ने समाधान हेतु अपना – अपना वैचारिक प्रयास किया है। हो सकता है इनमें से कुछ सदस्यों का यह बौद्धिक प्रयास आगे चलकर मानवीय संवेदनाओं के लिए कोई न कोई इतिहास बने।

लेकिन इसी जगह ' श्री विजय प्रकाश पाण्डेय, श्रीमती सुषमा पाण्डेय, श्री सौरभ पाण्डेय, श्री अमितेश पाण्डेय, डा0 दीपा श्रीवास्तव, डा0 अविनाश द्विवेदी, श्रीमती शान्ति द्विवेदी, श्री गिरजेश प्रसाद द्विवेदी, दिनेश कुमार मिश्रा, श्री मुकेश झा' आदि न्यासियों ने कोई प्रतिक्रिया न देकर इस विषय से पलायन करने का प्रयास किया है। सम्भवतः उन्हें यह लगा हो कि यह सब विश्वहित और राष्ट्रहित में नहीं है।

उपरोक्त समस्यायुक्त विषय के समाधान हेतु हमें 'मेटाफिजिकल' क्रम (भौतिकता और आध्यात्मिकता) में नये सिरे से विश्वहित और राष्ट्रहित में विचार करना चाहिए। – संयोजक)

9. क्या 'सनातन धर्म' से 'सर्वधर्म समभाव' की परिकल्पना मानवहित में की जा सकती है?

इस क्रम संख्या से सम्बन्धित प्रस्ताओं पर सदस्यों का विचार निम्नक्रम में प्रस्तुत है–

9.1–3. 'सनातन धर्म' से 'सर्वधर्म समभाव' की परिकल्पना की जा सकती है। यही एकमात्र धर्म है जो न केवल समस्त मानव में बल्कि समस्त प्राणीमात्र में ईश्वर का अंश देखता है। ईश्वर प्राप्ति के सभी धर्मों , मतों, पंगतियों को मान्यता प्रदान करते हुए उसे ईश्वर प्राप्ति का माध्यम बताता है। इस सम्बन्ध में आधुनिक काल (उन्नीसवीं शताब्दि का उत्तरार्द्ध) में उत्पन्न श्री रामकृष्ण परमहंस के विचार एवं जीवन ज्वलंत उदाहरण हैं जिन्होंने न केवल सनातन धर्म बल्कि इस्लाम धर्म एवं ईसाई धर्म का भी कुछ दिनों तक अनुसरण कर ईश्वर प्राप्ति करके दिखाया। उनके विचारों को स्वामी विवेकानन्द ने 'विश्वधर्म सम्मेलन' में प्रसारित किया।

–श्री मुरलीधर दुबे (प्र0 न्या0 स0/अध्यक्ष)/ श्रीमती मृदुला दुबे (प्र0 न्या0 स0) एवं श्री एस0 एन0 दुबे (प्र0 न्या0 स0)

9.4–5. सनातन धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है जिसमें 'वसुदैव कुटुम्बकम', प्रेम, अहिंसा , मानव कल्याण की भावना सन्निहित है। सनातन धर्म प्राचीन ऋषि – मुनियों के ज्ञान , अनुभव पर आधारित है जो मानव समुदाय के समक्ष जीवन के सत्य को प्रकट करता है तथा सत्य को प्राप्त करने के लिए जीवन प्रणाली को मानवता के समक्ष प्रस्तुत करता है।

किन्तु यह भी कटुसत्य है कि विभिन्न कारणवश मानव समाज उपरोक्त जीवन प्रणाली , सत्य के मार्ग पर चलने में असफल रहा है। आज के समय में विश्व में विभिन्न धर्म हैं जो सैद्धान्तिक रूप में मानवहित की ही बात करते हैं, किन्तु व्यावहारिक पक्ष इसके विपरीत है। जब तक मानव समाज में स्वार्थ, लालच, घृणा विद्यमान है तब तक कोई भी धर्म मानव समाज में प्रेम, एकता, अहिंसा आदि को उत्पन्न नही कर सकता

है। अतः सनातन धर्म भी 'सर्वधर्म समभाव ' को उत्पन्न करने में असफल है क्योंकि मानवीय स्वार्थ लालच सभी धर्मों को नकारात्मक व घृणास्पद बना चुका है।

– श्री तरुण कुमार सिंह / श्रीमती प्रीति राजपूत (प्र0 न्या0 स0)

9.6. सनातन धर्म का आरम्भ 'त्याग और अहिंसा' से होता है, जबकि अन्य धर्मों का आरम्भ 'प्रेम और तथाकथित भाई चारे' से होता है। जहां मानव – मानव के मध्य त्याग होगा वहां 'प्रेम' उसके पीछे – पीछे भागेगा। ऐसे में सनातन धर्म द्वारा ही 'सर्वधर्म समभाव' की कल्पना की जा सकती है।

– श्रीमती सरला द्विवेदी (प्र0 न्या0 स0)

9.7. मेरे विचार से सनातन धर्म से मानवहित में 'सर्वधर्म समभाव' की परिकल्पना और अपेक्षा मानवहित में निश्चय ही की जा सकती है। सनातन धर्म आध्यात्मिकता के समावेश के साथ राष्ट्र और विश्व स्तर पर सभी अन्य धर्मों और सामाजिक मान्यताओं को ध्यान में रखते हुए एक सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए सक्षम हो सकता है।

– श्री दिनेश मिश्रा (प्रं0 न्या0 स0)

9.8–9. सनातन धर्म में मानव को अपने आत्मतत्व को जानने हेतु प्रयासरत् होना चाहिए तथा इसके लिए महापुरुषों की वाणी तथा धार्मिक ग्रंथों के साथ – साथ श्रीमद्भागवत योग का पठन पाठन /मनन/चिन्तन एवं यथासम्भव परिपालन करना चाहिए ताकि मानव आत्मसाक्षात्कार हेतु अग्रसर हो सके। इस पथ पर अग्रसर समाज के लोगों में ही 'सर्वधर्म समभाव' की परिकल्पना मानवहित में की जा सकती है।

– श्री विजय प्रकाश पाण्डेय (प्र0 न्या0 स0/सचिव)/ सुषमा पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

9.10. **Sanatan Dharm teaches us to respect every religion. Sanatan Dharm is more of lifestyle, where both living and non – living being are respected. Sanatan Dharm talks about God being present in every individual. Thus we all are same and we need to respect believe & practices of other region also.**

-Anoop Kumar (Life Trustee)

9.11. **Fully agreed .**

Dr. Deepa Srivasava (Life Trustee)

9.12–14. धर्म एक व्यवस्था है जो एक जीवन को जीने की कला सिखाता है। सनातन धर्म दुनिया के सबसे अच्छे धर्मों से है जो सदा 'वसुदेव कुटुम्बकम' के नियम पर है और इसमें कई महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं जो हमारे जीवन को दिशा देती है। हमें इस धर्म की महत्ता को दूसरों तक जाकर पहुंचाना चाहिए।

– श्री गिरजेश प्रसाद द्विवेदी /श्रीमती शान्ति द्विवेदी /डा0 अविनाश द्विवेदी (आ0 न्या0 स0)

9.15. सनातन धर्म में ही 'वसुदेव कुटुम्बकम' की परिकल्पना की गयी है एवं जड़ चेतन समस्त प्राणी मात्र के कल्याण की कामना की गई है। अतः सनातन धर्म में ही 'सर्वधर्म समभाव' की परिकल्पना मानवहित में की जा सकती है।

–प्रमोद कुमार श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

9.16. सनातन धर्म धर्म प्रासंगिकता एवं प्रयोजनशीलता शांति, व्यवस्था, स्वतंत्रता, समता, प्रगति एवं विकास से सम्बन्धित समाज सापेक्ष परिस्थितियों के निर्माण में भी निहित है। सनातन धर्म में समस्त प्रकृति के कल्याण की परिकल्पना की गयी है, अतः सनातन धर्म से सर्वधर्म समभाव की परिकल्पना मानवहित में की जा सकती है।

– श्रीमती कुसुम श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

9.17. **No Comments.**

– श्री राजेश मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

9.18. हां, सनातन धर्म सर्वधर्म समभाव पर ही आधारित है।

– श्री श्रद्धानन्द श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

9.19. किया जा सकता है, परन्तु विभिन्न सम्प्रदायों , मान्यताओं पदों के लोगों को वैचारिक मतभेद पर स्वस्थ चर्चा करनी होगी।

— दयानन्द श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

9.20 —21. सनातन धर्म द्वारा सर्वधर्म समभाव की परिकल्पना मानवहित में की जा सकती है। सनातन धर्म सभी मानव जाति, पशु पक्षी एवं सम्पूर्ण प्रकृति के हित हेतु मार्ग प्रशस्त करता है। गीता का ग्रंथ भी सर्वधर्म समभाव एवं सभी प्राणियों का मार्ग दर्शन करता है।

— श्री सौरभ पाण्डेय / श्री अमितेश पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

9.22. सनातन धर्म में आत्मतत्व व मुक्ति के शाश्वत नियमों को जानने के लिए वेद, श्रुतियों, उपनिषदों, गीता, रामायण आदि का पठन पाठन, मनन व चिन्तन यथासम्भव किया जाना चाहिए।

भगवान शिव के बताए गए मार्ग पर ज्ञानार्जन व चिन्तन मनन करके सनातन धर्म के आत्मतत्व व मुक्ति के मार्ग को जानकर माया से ऊपर उठकर आनन्द की प्राप्ति हेतु मानव कल्याण व वसुदैव कुटुम्बकम् की अग्रसर होना।

—श्री दिनेश कुमार मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

9.23. सर्वधर्म समभाव की परिकल्पना ट्रस्ट का उद्देश्य होना चाहिए।

श्री मुकेश झा (आ0 न्या0 स0)

9.24. यह बहुत ही विस्तृत रूप से विचार करने युक्त विषय है। इसके बारे में एक दूसरे के विचारों को आपस में एक साथ बैठकर जोड़ना पड़ेगा। तभी कुछ निष्कर्ष निकल पायेगा।

सनातन धर्म में सबकुछ समाहित है।

— डा0 दीप्ति पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

9.25. हां, सनातन धर्म से सर्वधर्म समभाव की परिकल्पना मानव हित में की जा सकती है, क्योंकि सनातन धर्म एक ऐसा धर्म है जो यह आधार देता है कि सभी धर्मों को समान आदर के साथ देखा समझा जाता है। सनातन धर्म यह कभी भी नहीं सीखाता कि हम किसी भी धर्म का अपमान करें या किसी भी अलग धर्म के व्यक्ति से मतभेद रखें।

सनातन धर्म अपने आप में पूर्ण है। इसलिए यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि सनातन धर्म ही ऐसा धर्म है , जो सर्व समभाव की परिकपना

मानवहित में कर सकता है। यह प्रत्येक मानव में बिना भेदभाव किए उसे अपनाता है और कभी भी कोई ज्ञान प्रदान करने में संशय मात्र भी भेद भाव नहीं करता है।

– श्री पवनेश कु0 श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

9.26. मेरे विचार से सनातन धर्म से मानवहित में 'सर्वधर्म समभाव' की परिकल्पना और अपेक्षा मानवहित में निश्चय ही की जा सकती है।

– श्रीमती संध्या मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

(विशेष – 'सनातन धर्म' से 'सर्वधर्म समभाव' की परिकल्पना को लेकर सभी सदस्यों का विचार सकारात्मक रहा है।

जब धर्म का आरम्भिक आधार 'त्याग और अहिंसा' होता है तो उससे 'प्रेम और आपसी भाई चारा' आदि स्वतः जुड़ने लगता है। लेकिन विश्व और उससे जुड़े विविध राष्ट्रों के व्यापक जनमानस में सनातन धर्म को आरोपित करने से पहले अन्य धर्मों के साथ एक समन्वयात्मक सेतु निर्मित करना होगा। इसके लिए सनातन धर्म से जुड़ी कतिपय कटु मान्यताओं में एक आवश्यक बदलाव लाना होगा। इसके उपरान्त ही सर्वधर्म समभाव की परिकल्पना की जा सकती है। – संयोजक)

10. पूर्व 'राजाश्रय व्यवस्था' और वर्तमान की 'राजनैतिक व्यवस्था' में कौन व्यवस्था मानवहित में ज्यादा उपयोगी है?

इस क्रम संख्या से सम्बन्धित प्रस्ताओं पर सदस्यों का विचार निम्नक्रम में प्रस्तुत है–

10.1–3. पूर्व 'राजाश्रय व्यवस्था' और वर्तमान की 'राजनैतिक व्यवस्था' में कौन मानवहित में ज्यादा उपयोगी है, एक अत्यंत ही विवादास्पद विषय हमारे देश के सम्बन्ध में होगा। अब प्रजातन्त्र की नींव यहां अत्यन्त मजबूत हो चुकी है, लोगों ने एक लम्बे अन्तराल से स्वतन्त्रता एवं स्वच्छंदता का स्वाद चख लिया है। पुनः 'राजाश्रय' व्यवस्था की तरफ लौटना अब सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त दोनों व्यवस्थाओं की अपनी – अपनी विशेषता और कमियां हैं। छोटे आबादी वाले देशों में आज भी 'राजाश्रय व्यवस्था' एक या दूसरे रूप में प्रचलित है, परन्तु बड़े देशों में या तो प्रजातन्त्र है अथवा 'साम्यवादी'। हमें व्यवस्था में सुधार अपनी ही व्यवस्था में करने हेतु सोचना चाहिए।

—श्री मुरलीधर दुबे (प्र0 न्या0 स0/अध्यक्ष)/ श्रीमती मृदुला दुबे (प्र0 न्या0 स0) एवं श्री एस0 एन0 दुबे (प्र0 न्या0 स0)

10.4—5. प्राचीन राजाश्रय व्यवस्था व वर्तमान व्यवस्था में वर्तमान लोकतान्त्रिक प्रणाली श्रेष्ठ है। क्योंकि लोकतान्त्रिक प्रणाली में सरकार का उद्देश्य जनकल्याण होता है और विफलता की स्थिति में जनता को सरकार बदलने का अधिकार है। 'राजाश्रय व्यवस्था' में कुछ राजाओं को छोड़कर अधिकांश राजा स्वेच्छाचारी व निरंकुश बन जाते हैं और उनका उद्देश्य जनकल्याण न होकर व्यक्तिगत स्वार्थ बन जाता है। हम राजाश्रय प्रणाली के अच्छे गुणों को लेकर लोकतन्त्रात्मक शासन प्रणाली की त्रुटियों को दूर कर सकते हैं। क्योकि अतीत और वर्तमान की जीवन पद्धति व परिस्थितियों में अन्तर है।

— श्री तरुण कुमार सिंह / श्रीमती प्रीति राजपूत (प्र0 न्या0 स0)

10.6. राजाश्रय व्यवस्था में व्यापक जनमानस को राजा के अनुकूल चलना पड़ता है, जबकि राजनैतिक व्यवस्था में राष्ट्र प्रमुख को जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ना पड़ता है। क्योंकि जनमत के आधार पर राजनैतिक व्यवस्था को बदलने का अधिकार जनता के पास होता है।

'राजाश्रय' व्यवस्था' स्थाई होने के कारण कभी कभी निरंकुश और आक्रामक हो जाती है। उसी जगह राजनैतिक व्यवस्था जनता द्वारा समय — समय पर परिवर्तनशील है, क्योंकि यह व्यवस्था जनमानस के मतों पर आधारित है। इसलिए समीचीन में विश्व के सापेक्ष में राजनैतिक व्यवस्था (लोकतान्त्रिक व्यवस्था) राजाश्रय व्यवस्था के सापेक्ष में व्यापक जनमास के लिए ज्यादा हितकर और सार्थक है।

— श्रीमती सरला द्विवेदी (प्र0 न्या0 स0)

10.7. समय, काल के अनुरूप 'राजाश्रय व्यवस्था' की अच्छाइयों, गुणों का, जो कि मानवहित में समय के सापेक्ष लाभप्रद सिद्ध हो, वर्तमान व्यवस्था में समावेश करने का प्रयास करना चाहिए। राजाश्रय व्यवस्था में एक परिवार के पास सत्ता और नियंत्रण होने से राजा की सोच और साथ ही राजपरिवार के अन्य सदस्यों का समीकरण और सोच का प्रभाव निर्णयात्मक हो सकता है। लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं में सत्ता उसी के पास रहेगी जिसे

जनमानस चाहेगी और समर्थन देगी। वर्तमान परिस्थितियों में राजनैतिक व्यवस्था ज्यादा उपयोगी हो सकती है।

– श्री दिनेश मिश्रा (प्र0 न्या0 स0)

10.8–9. पूर्व राजाश्रय व्यवस्था में भी राज्यविस्तार की कामना के कारण राजाओं में अहंकार की भावना के साथ ईर्ष्या द्वेष पूर्ण वातावरण होने पर प्रायः संघर्ष पूर्ण/युद्ध होते रहते थे। कभी – कभी कुछ राजाओं के अहंकार का सामना होने पर उन्हें ऋषि – मुनियों (यथा – महर्षि वशिष्ठ एवं राजा विश्वरथ) का कोपभाजन बनना पड़ा। वर्तमान लोकतन्त्रात्मक राजनीतिक व्यवस्था , यदि ईमानदारी से सभी लोग मिलकर संचालित करें तो श्रेष्ठ है, परन्तु जब नेताओं एवं अपराधियों के गठजोड़ से सत्ता हासिल करके अधिकारियों को समर्थन करने हेतु विवश किया जाये तो स्थिति बद से बदतर हो जाती है।

– श्री विजय प्रकाश पाण्डेय (प्र0 न्या0 स0/सचिव)/ श्रीमती सुषमा पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

10.10. **Every form of government has its own merit and demerits. However merits of social democracy outweighs merit of patriarchy monarch from of governance. Old monarch form of of government was generally family based, where royal family had all privileges with no accountability . While in social democracy common man has right to elect a government and most importantly they are fully accountable and can be changed if they fail to perform . Idea of democracy is welfare of society, while Monarchy works for benefit of royal family only.**

-Anoop Kumar (Life Trustee)

10.11. **Fully agreed.**

Dr. Deepa Srivasava (Life Trustee)

10.12–14. भारत एक महत्वपूर्ण देश है, पर स्वार्थ एवं लालच की वजह से हमारे नेता भी लोक सेवक इत्यादि से मिलकर व्यवस्था को ध्वस्त कर रहे हैं, जिनके कारण 70 साल बाद भी हम विकसित नहीं हो पा रहे हैं। हमारी व्यवस्था हमें ईमानदारी की तरफ प्रेरित करे तो हम अपना सपना

साकार कर सकते हैं। आज अमीर ज्यादा बनने के लिए गलत कार्य कर रहे हैं और निर्धन अपने जीने के लिए। मध्यम वर्ग जो हर तरफ से पीड़ित है उसे सही मार्ग दर्शन तथा प्रेरणा अत्यन्त आवश्यक है।

– श्री गिरजेश प्रसाद द्विवेदी /श्रीमती शान्ति द्विवेदी /डा0 अविनाश द्विवेदी (आ0 न्या0 स0)

10.15. राजनैतिक व्यक्ति (राजा) में छह गुण (व्याख्यान शक्ति, प्रगल्भता, तर्ककुशलता, नीतिगत निपुणता, अतीत की स्मृति और भविष्य के प्रति दृष्टि अर्थात दूरदर्शिता आदि) आवश्यक माने गये हैं।

वर्तमान राजनीति से जुड़े लोग प्रायः अपनी विलासप्रियता के कारण आर्थिक लाभ लोभ से ग्रस्त होकर भ्रष्ट हो जातें हैं। जो आर्थिक भ्रष्टाचार के पाप पंक में नहीं गिरते, वे यश लोलुपता के मकडजाल में जकड़कर अपने उद्देश्य से भटक जाते हैं। जिस कारण सार्वजनिक जीवन की सुख शान्ति बाधित होती है। इसलिए पूर्व राजाश्रय व्यवस्था मानवहित में ज्यादा उपयोगी है।

–प्रमोद कुमार श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

10.16. यदि प्राचीनकाल की राजनीतिक व्यवस्था एवं वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो यह निश्चित मिलता है कि प्राचीनकाल में अपराध बहुत कम होते थे। राजा यदि न्याय प्रिय होता था तो प्रजा भी उसका अनुकरण करने का प्रयास करती थी। जबकि वर्तमान राजनीति में येनकेन प्रकारेण मात्र सत्ता प्राप्ति ही मुख्य उद्देश्य रह गया है। राष्ट्र और प्रजा के कल्याण का उद्देश्य ही नहीं रह गया है। अतः पूर्व राजाश्रय व्यवस्था मानवहित में ज्यादा उपयोगी है।

– श्रीमती कुसुम श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

10.17. मेरे विचार में राजाश्रय व्यवस्था और वर्तमान की राजनीतिक व्यवस्था, दोनों ही के कुछ लाभ और कुछ खामियां है। राज्य व्यवस्था अपने समय में एक छोटे क्षेत्र में राजाओं की अपनी व्यवस्था होती थी और हर राज्य के अलग – अलग नियम कानून और उनको चलाने की प्रक्रिया होती थी। आज की राजनीतिक व्यवस्था में देश के पूरे राज्यों का एक प्रमुख व्यवस्थापक होता है और पूरे राष्ट्र का एक कानून होता है, उसको

चलाने की एक व्यवस्था जो पूरे राज्य में सामान्य रूप से उसको माना जाता है और उसका पालन किया जाता है। इन दोनों ही व्यवस्थाओं में कुछ लाभ व हांनि है, जो कि निम्न प्रकार है –

1.प्रत्येक राज्य के अलग – अलग राजा होते थे, यदि किसी एक राज्य का राजा बुरा होता था तो दूसरे राज्य में उसकी बुराई का कोई असर नहीं पड़ता था, किन्तु राजनैतिक व्यवस्था में ऐसा नहीं है।

.2. राजाश्रय व्यवस्था के अन्तर्गत राज्यों को आपस में समन्वय बनाए रखने में बहुत ही कठिनाई होती थी, किन्तु राजनीतिक व्यवस्था में एक ही कानून व्यवस्था होने के कारण आपस में समन्वय बनाना आसान है।

3. राजाश्रय व्यवस्था लोकतान्त्रिक व्यवस्था के अन्तर्गत नहीं मानी जा सकती किन्तु राजनीतिक व्यवस्था एक लोकतान्त्रिक व्यवस्था है जिसमें पूरे राज्य के लोग अपने नेतृत्व का चयन करते हैं।

उपरोक्त बिन्दुओं को देखें तो यह स्पष्ट है कि दोनों व्यवस्थाओं के अपने कुछ लाभ और कुछ खामियां हैं। अगर हम राजाश्रय व्यवस्था की परिकल्पना करें , वह किसी भी तरीके में चरितार्थ नहीं हो सकता है। अतः हमें राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत ही अपने समाज और जनमानस की उन्नति के विकल्पों पर विचार कर आगे बढ़ सकते हैं।

– राजेश मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

10.18. मानव जाति के लिए वह कोई व्यवस्था ठीक नहीं है जो भय, पक्षपात पर आधारित है, जिस भी व्यवस्था में हर क्षेत्र में न्याय समानता पर आधारित हो, भय और पक्षपात रहित हो वही व्यवस्था मानव हित में है।

– श्री श्रद्धानन्द श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

10.19. जन साधारण को सुलभ न्याय एवं पक्षपात रहित व्यवस्था देने पर सभी तन्त्र समाज के लिए विकासोन्मुख होंगे।

– दयानन्द श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

10.20–21. वर्तमान लोकतान्त्रिक व्यवस्था , यदि सभी लोग मिलकर ईमानदारी से मानवहित एवं राष्ट्रहित का ध्यान केन्द्रित करते हुए पूर्ण मनोयोग एवं व्यक्तिगत रूप से लागू की जाए तो वह पूर्व राजाश्रय व्यवस्था से ज्यादा हितकारी होगी।

– श्री सौरभ पाण्डेय , श्री अमितेश पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

10.22 लोकतान्त्रिक व्यवस्था में सत्य के साथ ईमानदार बने रहना।

–श्री दिनेश कुमार मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

10.23. पूर्व कालीन इतिहास से हमने कुछ नहीं सीखा है, पहले राजा थे, अब नेता। देश की स्थिति बत से बत्तर हो चुकी है।

– मुकेश झा (आ0 न्या0 स0)

10.24. राजधर्म और राष्ट्रधर्म दोनों के उचित नियमों को जोड़कर एक नयी व्यवस्था को समाज में लाना ही समाज और मानवहित में उपयोगी हो सकता है।

– डा0 दीप्ति पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

10.25. पूर्व राजाश्रय व्यवस्था और वर्तमान की राजनीतिक व्यवस्था में वर्तमान की राजनीतिक व्यवस्था पूर्व राजाश्रय व्यवस्था से कहीं अधिक मानवहित में उपयोगी है। इसके मुख्य निम्न कारण हैं–

1.पूर्व राजाश्रय व्यवस्था में शिक्षा और पदों को ग्रहण करने का अधिकार उनकी जातियों के आधार पर दिया जाता था। वहां पर राजा पर कोई प्रश्न नहीं उठा सकता था, या जो पदाधिकारी हुआ करते थे, उनके ऊपर दोषारोपण करने का तो कोई दुस्ससाहस नहीं कर सकता था। अपने स्वयं के अधिकार उन्हें मांगने पड़ते थे।

2.यदि राजा विवेकी है तो प्रजा, ईश्वर को बहुत धन्यवाद प्रदान करती थी।

3. यदि राजा विवेकशील न हुआ तो वहां की प्रजा यही सोचती थी कि वह कब तक उनके सानिध्य में अपना जीवन यापन करेगी। उन्हें उस राजा से कब मुक्ति मिलेगी, क्योंकि उनके अधिकार सीमित होते थे। वहां सम्पूर्ण रूप से उचित न्याय नहीं हो पाता था।

वहीं पर हम देखते हैं कि हमारी वर्तमान व्यवस्था की राजनीतिक व्यवस्था पूर्ण रूप से लोकतन्त्र पर आधारित है। जहां पर व्यवस्था का मुख्य व्यवस्थापक (प्रधानमंत्री/राष्ट्रपति) प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा प्रदान किए गए उसके मतों के आधार पर बनता है। उसे अपने कार्य और प्रयास के द्वारा अपने पद और योग्यता को निरंतर सिद्ध करना पड़ता है। यदि

वह अपने कार्य को जनमानस के हित में सम्पन्न नहीं कर पाता है तो आगे के चुनाव में जनता अपने मतों द्वारा उसे पदमुक्त कर सकती है।

अतः वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था, पूर्व राजाश्रय व्यवस्था से ज्यादा उपयोगी है। इसमें व्यापक जनमानस का ज्यादा हित है।

– श्री पवनेश कुमार श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

10.26. कोई टिप्पणी नहीं।

– श्रीमती संध्या मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

(विशेष – पूर्व 'राजाश्रय व्यवस्था' और वर्तमान की 'राजनैतिक व्यवस्था' के अपने – अपने मूलभूत सिद्धान्त है। इसे निम्न दो बिन्दुओं पर केन्द्रित करने का प्रयास किया जा सकता है –

1.अधिकांश राजाश्रय व्यवस्था, राजधर्म पर आधारित होती थी। उसी के आधार पर राजाश्रय व्यवस्था के गुण/अवगुण का मूल्यांकन होता था।

2. राजनैतिक व्यवस्था, व्यापक जनमानस के मतों पर आधारित है। यह व्यवस्था एक व्यापक नियम/ संविधान पर आधारित है।

उपरोक्त दोनों व्यवस्थाओं में व्यापक जनमानस किसी न किसी रूप में प्रभावित होता रहता है। इसलिए राजनीतिक व्यवस्था में भी जब तक धर्म/अध्यात्म का आवश्यक समावेश नहीं होगा तब तक इसे भी व्यापक जनमानस के लिए आर्थिक/समपन्नता के आधार बहुत जन उपयोगी नहीं माना जा सकता है। इन बिन्दुओं पर एक विश्वस्तरीय व्यापक सर्वेक्षण की आवश्यकता है। – संयोजक)

11. क्या धर्म/अध्यात्म से राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर रचनात्मक मानवीय समाधान हो सकता है? यदि हां तो कैसे? यदि नही ंतो अन्य समाधान क्या हो सकता है?

इस क्रम संख्या से सम्बन्धित प्रस्ताओं पर सदस्यों का विचार निम्नक्रम में प्रस्तुत है–

11.1–3. धर्म/अध्यात्म से राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर रचनात्मक मानवीय समाधान हो सकता है। इसके लिए कुछ संस्थाएं पहले भी कार्यरत् हैं। जब 'मानवता' , 'मानवीय मूल्यों' एवं 'मानवीय आध्यात्मिक शक्ति' का विकास की बात होती है, तो अधिकांश विश्व समुदाय , विशेषकर पाश्चात्य

देशों में , इसको स्वीकार्यता मिलती है, परन्तु कुछ कठोर विचारधारा वाले लोग ऐसे प्रयासों का हर तरह से विरोध करते हैं। उनमें मनुष्य के अंश ' एक ही ईश्वर के अंश' की बात बताना उपयोगी हो सकता है, परन्तु लम्बे समय से जमी मानसिक धारणा को बदलना आसान नहीं है। कई बार यह घातक भी हो सकता है। धर्म से परे विशुद्ध 'अध्यात्म' इस मार्ग में सहायक हो सकता है। 'विश्व बंधुत्व' ,सत्यमेव जयते' , 'अहिंसा परमोधर्मः' आदि अमृत वाक्य जीवन मे ंरमे बसे हैं।

—श्री मुरलीधर दुबे (प्र0 न्या0 स0/अध्यक्ष)/ श्रीमती मृदुला दुबे (प्र0 न्या0 स0) एवं श्री एस0 एन0 दुबे (प्र0 न्या0 स0)

11.4—5. धर्म / अध्यात्म व्यक्ति को ईश्वर से जोड़ता है। व्यक्ति के नैतिक गुण , कर्तव्य पालन, प्रेम शक्ति और अहिंसा आदि को प्रस्थापित करता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपना जीवन अनुशासित रूप में व्यतीत करता है।

किन्तु जब तक विश्व में धर्म/अध्यात्म की एक स्वीकृत परिभाषा नहीं बनती तब तक धर्म संघर्ष का कारण बनता है और समाज को समाधान की बजाय विनाश की ओर ले जाता है। धर्म जब तक व्यक्तिगत है तब तक तो ठीक है किन्तु जब बलात् थोपा जाता है तो वह विध्वंसक हो जाता है। यह भी समाज में देखा जाता है कि धर्म के नाम पर फैली कुरीतियां अधिकांश व्यक्तियों के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालती है — चाहे ईश्वर या प्राचीन आदर्शों के नाम पर उन पर पर्दा डालने का कितना ही प्रयास क्यों न किया जाये। मानवता के उत्थान के लिए हम प्राचीन आदर्शों व सिद्धान्तों के आधार पर कुरीतियों को स्वीकार नही ंकर सकते।

हमें यह स्वीकारना होगा कि धर्म/अध्यात्म समाज में अपनी भूमिका को निभाने में कहीं न कहीं असफल रहा है।

विश्व में मानव कल्याण के लिए हमें वर्तमान परिस्थितियों को स्वीकारना चाहिए क्योंकि वर्तमान से ही भविष्य का मार्ग निकलता है। हमें प्राचीन धर्म, धार्मिक सिद्धान्तों से अलग सिद्धान्त मानव भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए बनाने होंगे और इसमें अतीत के गुणों को भी समाहित करना

होगा व कुरीतियों से बचना होगा तभी सुखद व शक्तिशाली भविष्य निर्मित होगा।

– श्री तरुण कुमार सिंह / श्रीमती प्रीति राजपूत (प्र0 न्या0 स0)

11.6. धर्म/अध्यात्म मानव को निरंतर मूल्ययुक्त बनाता है। जब व्यक्ति मानवीय मूल्यों से जुड़ेगा तो वह असाधु कृत्यों से शनैः शनैः मुक्त होगा।

अन्य संसाधनों में व्यक्ति असाधुकृत्यों का त्याग नही ंकर पाता है। ऐसे में मानवीय मूल्य कहां टिकेंगे। – यह सब विज्ञजनों के लिए विचारणीय है और आगे भी रहेगा।

– श्रीमती सरला द्विवेदी (प्र0 न्या0 स0)

11.7. निश्चय ही धर्म/अध्यात्म से राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर रचनात्मक मानवीय समाधान हो सकता है, क्योकि मेरे विचार में धर्म/आध्यात्मिकता का आधार और उद्देश्य ब्रह्माण्ड के सभी अंगों और उसमें रहने, पनपने वाले हर प्राणी , तत्वों की सुरक्षा और संवर्द्धन का है, वह तो मूल कारण और कारक दोनों ंहो सकता हैं ं। इसके बिना किन्ही अन्य प्रकार मात्र से राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर रचनात्मक मानवीय समाधान होने की सम्भावना सम्भव नहीं के बराबर हो सकती है।

– श्री दिनेश मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

11.8–9. जो धर्म मानव समाज को आत्मचिन्तन / आत्म साक्षात्कार हेतु प्रेरित करे तथा प्रेमपूर्ण वातावरण तैयार करने हेतु यथोचित प्रयास करेगा तभी राष्ट्रय/विश्वस्तर पर रचनात्मक मानवीय समाधान हो सकेगा।

– श्री विजय प्रकाश पाण्डेय (प्र0 न्या0 स0/सचिव)/ सुषमा पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

11.10. **Creativity is phenomenon where by something new and valuable is formed . This could be field technology, philosophy , humananities etc. Religion or spiritualism gives right direction to creativity. Spiritualism has lot of unanswered questions and also has solution for lot of questions. Creatiity is basis of growth and development of human being.**

-Anoop Kumar (Life Trustee)

11.11. **Totally agree.**

Dr. Deepa Srivasava (Life Trustee)

11.12–14. धर्म हमारे जीवन को एक समझ दे पाये कि हमारा आने का उद्देश्य क्या है तो शायद हम और अच्छा कर पायेंगे। अगर हम विचारों को जानने के साथ – साथ आत्मसात भी कर पाये तो हमारा परिवार चार दिवारों से बढ़कर पूरी दुनिया हो जायेगा।

– श्री गिरजेश प्रसाद द्विवेदी /श्रीमती शान्ति द्विवेदी /डा0 अविनाश द्विवेदी (आ0 न्या0 स0)

11.15. धर्म सदैव से मानवता मूलक रहा है। इस दृष्टि से राम हमारे आदर्श हैं जिन्होंने प्रत्येक अवसर पर प्रत्यक्ष रूप से मानव धर्म का पालन किया है। रामचरितमानस के राम ही हमारे आराध्य बने जिनमें करोड़ों – करोड़ों प्रजा अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढ़ सकती थी।

कर्तव्य चाहे व्यक्ति के प्रति हों....समाज के प्रति, राष्ट्रके प्रति , वे व्यक्ति धर्म के अन्तर्गत ही आते हैं, हमारा आदर्श वही होना चाहिए।

मानव को उसके स्थान, जलवायु, कलजनित अस्तित्व को स्वीकार कर उसकी विकृतियों को आध्यात्मिक चिंतन के आधार पर दूर करने की कोशिश करेंगे, सभी को जीवन यापन की कुछ सुविधाएं दे सके, मानव मात्र में मानव के लिए प्रेम की भावना उत्पन्न कर सके, तो धर्म और अध्यात्म की सार्थकता सिद्ध हो जाए।

–प्रमोद कुमार श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

11.16. जब हम युग को मानवतावादी विचारधाराओं से जोड़ते हैं तो उसमें राष्ट्रीय सीमाओं के लिए स्थान नहीं रहता । राष्ट्रीयता और अर्न्तराष्ट्रीयता के सीमाजनित बंधनों से आगे जाकर जब हम सोंचेंगे तभी अपने मन की भावनाओं को जबरदस्ती दूसरों पर थोपने की कोशिश करेंगे। धर्म/अध्यात्म के लिए जनमानस को रचनात्मक रूप से जागरुक करेंगे तो अवश्य ही समस्त संसार के लिए रचनात्मक समाधान मिल सकता है।

– श्रीमती कुसुम श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

11.17. **No Comments.**

– श्री राजेश मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

11.18. हर धर्म/अध्यात्म से परिपूर्ण प्रशासक/न्यायविद से हर क्षेत्र में राष्ट्रीयहित का समाधान हो सकेगा।

– श्री श्रद्धानन्द श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

11.19. सम्भव है (धर्म/अध्यात्म द्वारा), यदि समाधान हेतु निस्वार्थ भाव उत्पन्न किया जा सके। समस्या यह है कि सभी के लिए धर्म/अध्यात्म की परिभाषा अलग – अलग है। यही अलग अलग परिभाषाएं समस्याओं के समाधान का अन्य विकल्प प्रकट करती है।

– दयानन्द श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

11.20–21. धर्म एवं अध्यात्म से राष्ट्रीय एवं विश्व स्तर पर रचनात्मक मानवीय समाधान हो सकता है। सभी प्रकार की सभ्यताएं धर्म एवं अध्यात्म के मार्ग पर चलकर ही विकास की सतत् अवधारणा को सही प्रकार से क्रियान्वित कर पाती हैं। व्यक्ति एवं समाज धर्म एवं अध्यात्म से मार्गदर्शन प्राप्त कर विशिष्ट गुणों का निर्माण करता है जो सम्पूर्ण प्रकृति के हित में कार्य करने हेतु आवश्यक होता है।

– श्री सौरभ पाण्डेय /श्री अमितेश पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

11.22. सनातन धर्म के शाश्वत नियमों /मूल्यों का समस्त मानव समाज को आत्म साक्षात्कार कराना जिससे समस्याओं का रचनात्मक समाधान हो सके।

–श्री दिनेश कुमार मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

11.23. धर्म को मानव समाज में अगर विकसित करना है तो 'माता पिता और गुरु' से पाठ पढ़नी होगी, तभी मानव समाज का विकास कर पायेंगे।

– मुकेश झा (आ0 न्या0 स0)

11.24. धर्म /अध्यात्म से जुड़कर ही एक स्वस्थ्य और सुन्दर परिवार या समाज की परिकल्पना की जा सकती है।

जब समाज या मानवजाति के विकास की बात होती है तो अति आवश्यक है कि उसे धर्म से जोड़ा जाए।

– डा0 दीप्ति पाण्डेय (आ0 न्या0 स0)

11.25. . धर्म /अध्यात्म से राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर रचनात्मक मानवीय समाधान हो सकता है क्योंकि यही एक माध्यम है जिसके द्वारा हम राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर रचनात्मक मानवीय समाधान कर सकते हैं।

– पवनेश कुमार श्रीवास्तव (आ0 न्या0 स0)

11.26 धर्म/अध्यात्म सही तरीके से (बुराइयों / कमियों को दूर करके) रचनात्मक मानवीय समाधान का माध्यम हो सकता है। आज की परिस्थितियों में पुरानी रूढ़वादी मान्यताओं, जो समाज के लिए लाभप्रद नहीं है , उनको जबर्दस्ती थोपना नहीं चाहिए,बल्कि प्रगतिशील विचारधारा को अपनाकर अपनी संस्कृति/संस्कार यानि धर्म और अध्यात्म के साथ बढ़ना चाहिए।

– श्रीमती संध्या मिश्रा (आ0 न्या0 स0)

(चिशेष – धर्म/अध्यात्म से राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर रचनात्मक मानवीय समाधान के लिए हमें जन – जन को उसके (धर्म/अध्यात्म) व्यापक रचनात्मक गुणों का बोध कराना होगा। निश्चित रूप से यह कार्य समाजसेवी संस्थानों और धार्मिक संस्थानों का है।

ट्रस्ट के सदस्यों का उपरोक्त विचार निश्चित रूप से इस श्रृंखला का 'क ख ग....' सिद्ध होगा। – संयोजक)

12. अध्यक्ष (श्री मुरलीधर दुबे) का वक्तव्य निम्नक्रम में प्रस्तुत है –

परम आदरणीय गुरुजी एवं माननीय सदस्यगण,

जैसा कि आप सब अवगत हैं वर्ष 2020 एवं 2021 कोरोना महामारी से प्रभावित रहा है। जीवन के हर क्षेत्र में गतिविधियां जैसे ठहर सी गई थी। सामाजिक मिलना जुलना , शादी – विवाह , धार्मिक उत्सव का आयोजन , तीज – त्योहार , आवागम सभी पर इसका बुरा प्रभाव पड़ा। सभी क्षेत्रों में एक ठहराव की स्थिति आ गयी थी, परन्तु हमारे सशक्त संचार माध्यमों , इंटरनेट सेवाएं, गूगल, व्हट्सएप, फेसबुक आदि आधुनिक सुविधाओं ने न केवल जीवन में गतिशीलता किसी न किसी रूप में कायम रखी, बल्कि कई क्षेत्रों में नये – नये विचार एवं व्यवस्था कों भी विकसित

की। फलस्वरूप सूचनाओं का आदान – प्रदान, विचारों का प्रेषण, कार्यालयों की कार्य प्रणाली (**Work from home)** , बच्चों को शिक्षा **(online)** आदि कुछ नये तरीके विकसित हुए। आर्थिक गतिविधयों ने भी अपना आयाम बदला, फलस्वरूप कुछ प्रारम्भिक ठहराव के बाद अब आर्थिक मंदी का दौर समाप्तप्राय है। 125 करोड़ की आबादी को टीका लगाने का कार्य भी प्रशासनिक दक्षता का द्योतक है। हमने अपने अभिन्न करीबी लोगों को इस दौर में विशेषकर अप्रैल – मई 2021 के समय में खोया। हमारे अपने ट्रस्ट के एक मूर्धन्य विद्वान व उत्कट सहयोगी को भी हमने असामयिक ही खो दिया, जिससे ट्रस्ट को एवं उनके परिवार को अपूरणीय क्षति हुई। सभी सदस्यों का कुशलक्षेम बनाए रखने में गुरुजी की विशेष कृपा एवं आशीर्वाद रहा, उन्होंने सभी सदस्यों के आध्यात्मिक स्तर को ऊंचा करने हेतु 'टेलीपैथी' माध्यम का भी सहारा लिया। हमारी इस वर्ष की 'आमसभा' की बैठक भी **(online)** हो रही है। इस संकट के दौर में भी 'सचिवः का सहयोग भी सराहनीय रहा है।

हमारा ट्रस्ट अपने छोटे से आयाम में सीमित संसाधनों द्वारा मानव एवं समाज के आध्यात्मिक उन्नयन में सक्रिय है। आज जबकि समाज में एक भौतिक अतिवाद का तर्क प्रचलित हो रहा है, और सभी शाश्वत मूल्यों को हर ओर में चुनौतियां मिल रही है, हमारे समाज को एक मूठ में पिरोकर बांधें रखना काम के समय ही नई चुनौती दिखाई दे रही है। राजनैतिक स्वार्थपरता समाज को विखडित करती दिखाई दे रही है। इससे कैसे बचा जाय , यह एक ज्वलंत मुद्दा बन गया है। 'अनेकता में एकता' की सामाजिक विशेषता में घुन लगता जा रहा है। इसे राष्ट्रवाद एवं समाज के प्रगति के पथ पर कैसे मोड़ा जाए, यह हमारे भविष्य की चिंता का विषय बन गया है। यदि समय रहते इससे प्रभावी ढंग से निपटा नहीं गया तो हम पुनः मध्ययुगीन काल की सामाजिक व्यवस्था की ओर अग्रसर होंगे, जिसका दुष्परिणाम भयावह होगा। कदाचित इसी भाव से हमारे एजेण्डा के बिन्दु संख्या –7 में यह बिन्दु रखा गया है कि हम कैसे बहुमुखी वैचारिक मुख्यधारा का राष्ट्र एवं समाज के उत्थान में प्रयोग कर सकते हैं। इस क्षेत्र में सतत् चिन्तन एवं लेखन की आवश्यकता है। निश्चय भारत की सनातन परम्परा एवं आध्यात्मिक तथा दार्शनिक सम्पन्नता हमें रास्ता दिखाने का कार्य करेगी। इस क्षेत्र में ट्रस्ट का प्रयास सराहनीय है। आवश्यकता है, इसे व्यापकता का रूप प्रदान करने की।

अंत मे ंहम सभी माननीय सदस्यों के स्वस्थ्य जीवन , दीर्घायु होने एवं बौद्धिक रूप से और सक्रिय रहने की कामना करते हैं।

शुभकामनाओं सहित ,

– श्री मुरलीधर दुबे,

अध्यक्ष – कार्यकारिणी समीति / प्रबंधक न्यासी सदस्य

अज्ञानाश्रय ट्रस्ट, वाराणसी ।

(विशेष – सभी 'प्रबंधक न्यासी सदस्य' और आजीवन न्यासी सदस्यों के उपरोक्त सार्थक विचारों का संशोधित संग्रह 'वार्षिक समारोह/आमसभा' – स्तम्भ के अन्तर्गत 'अज्ञानाश्रय ट्रस्ट' की बेवसाईट पर प्रस्तुत किया जा सकता है। – संयोजक)